डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस.आर.ए.पी. कॉलेज
बारा-चकिया

B.A. Part-I
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - I

Date :- 03-02-2022

कबीरदास के पद (भक्ति से) भाग-3

ज्ञान सँपूरन ना भिदा,
हिरदा नाहिं जुड़ाय।
देखा देखी भक्ति का,
रंग नहीं ठहराय॥

भावार्थ :—

कबीरदास कहते हैं कि भक्ति का रंग मनुष्य पर देखा-देखी अथवा स्पर्धा-भाव से नहीं चढ़ने वाला है। मानव के अन्तःकरण में सच्ची भक्ति का वास तब तक नहीं हो सकता है जब तक जीव का भ्रम और अज्ञान दूर नहीं होता है। ईश्वर उसी भक्त को अपनाते हैं जो निष्काम और निराश्रय है।

खेत बिगार्यो खरतुआ,
सभा बिगारी कूर।
भक्ति बिगारी लालची,
ज्यों केसर में धूर॥

भावार्थ :-

कबीरदास कहते हैं कि जिस प्रकार खर-पतवार के उग जाने से खेत में उपज कम हो जाती है उसी प्रकार मुर्ख और

Scanned by CamScanner

निकम्मे लोगों द्वारा सभा में गड़बड़ी फैला दी जाती है, जिसके प्रभाव से भक्ति की हानि होती है। सच्चा प्रेम और भक्ति उसी में जाग्रत हो सकती है जिसमें किसी प्रकार के लोभ आदि वासनाओं का स्पर्श न हो। जिस प्रकार केशर में धूल मिल जाने से उसकी सुगंध समाप्त हो जाती है, उसी प्रकार लोभ उत्पन्न हो जाने से भक्ति समाप्त हो जाती है।

Scanned by CamScanner